विकास के नियम
(Principles of Development)

विकासात्मक अध्ययनों से विकास प्रक्रिया के विषय में कुछ मौलिक और पूर्वकथनीय

Scanned by CamScanner

तथ्यों पर प्रकाश पड़ा है। यह तथ्य विकास के प्रतिमानों को समझने के लिए आवश्यक है। इन्हें विकास के नियम कहा जाता है। विकास के अन्तर्गत होने वाले परिवर्तन इन्हीं नियमों के अनुसार घटित होते हैं। व्यवहार में घटित होने वाले विविध प्रकार के परिवर्तन इन्हीं सामान्य तथ्यों अथवा नियमों का अनुसरण करते हैं। अतः इनका समुचित ज्ञान होना आवश्यक प्रतीत होता है, क्योंकि विकास संबन्धी यह तथ्य व्यवहार के परिवर्तनों को समझने में सार्थक होते हैं। यहाँ विकास के प्रमुख नियमों की संक्षिप्त चर्चा की जाएगी।

1. विकास प्रतिमान पूर्वकथनीय होते हैं (The Developmental pattern is predictable) - प्रत्येक प्रजाति या वर्ग, चाहे मानव या पशु के विकास का एक प्रतिमान होता है जो उस वर्ग के लिए सामान्य होता है। गर्भकालीन विकास में एक जैविक अनुक्रम होता है, जिसके कारण कुछ समय अन्तराल से कुछ निश्चित लक्षण अभिव्यक्त होते हैं। जन्म के पश्चात के विकास में भी वे नियमित और अनुक्रमिक परिवर्तन प्रकट होते हैं, यद्यपि व्यक्तित्व विकास की गति भिन्न हो सकती है।

सभी सामान्य बच्चों में यह गुण बहुधा एक अवस्था में व्युत्पन्न होते हैं। अतः उन लक्षणों या गुणों के विषय में माता-पिता तथा अन्य सम्बद्ध व्यक्ति पूर्वकथन कर सकते हैं। यह पूर्वकथन बालकों की शिक्षा में बहुत उपयोगी होते हैं। इस पूर्वज्ञान के आधार पर उस अवस्था में बालकों से उन्हीं गुणों की प्रत्याशा करते हैं और तदनुसार उनकी शिक्षा आदि की व्यवस्था की जाती है। विकास के पूर्वकथन का शिक्षा की योजना, अगली अवस्था की तैयारी तथा व्यवसायिक नियोजन की दृष्टि से बहुत महत्त्व है।

2. विकास का निश्चित क्रम होता है (Development has a definite pattern) - विकास के निश्चित प्रतिमान का अभिप्राय यह है कि विकास क्रमिक और व्यवस्थित होता है। उदाहरण के लिए चलने से पहले बच्चे बैठना आरम्भ करते हैं। इसी प्रकार बच्चों का संज्ञानात्मक विकास भी क्रमिक रूप से होता है।

बालकों के शारीरिक विकास में दो निश्चित नियमों का अनुसरण होता है, जो निम्न हैं-

(i) मस्तकाधोमुखी क्रम (Cephalo caudal-sequence) और

(ii) निकट-दूर क्रम (Proximo-distal sequence)

(i) मस्तकाधोमुखी क्रम- शारीरिक विकास में एक विशेष क्रम पाया जाता है, जैसे शारीरिक संरचना में उन्नति और विभिन्न अंगों के नियंत्रण की क्षमता सर्वप्रथम सिर के क्षेत्र में आती है, तब धड़ के भाग में और सबसे अन्त में पैरों के क्षेत्र में। यह क्रम गर्भकालीन तथा जन्मोपरान्त के विकास, दोनों अवस्थाओं में देखा जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि शारीरिक क्रियाओं का विकास सिर के क्षेत्र से प्रारम्भ होकर, धड़ तथा पैर की ओर बढ़ता है। सिर तथा इसके समीपवर्ती भागों जैसे गर्दन और मुँह की क्रियाएँ सर्वप्रथम विकसित होती हैं, इसके बाद पेट एवं धड़ और तब कहीं पैरों के क्षेत्र में क्रियाएँ विकसित होती हैं। यही अनुक्रम मानसिक क्रियाओं के विकास मे भी अभिव्यक्त होता है। शरमैन (Sherman) के

Scanned by CamScanner

अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि शिशुओं में संवेदनाओं का विकास सर्वप्रथम शरीर के ऊपरी भागों में आरम्भ होता है और निचले भागों में अन्त में होता है। यही क्रम क्रियात्मक नियंत्रण में भी अभिव्यक्त होता है।

(ii) निकट-दूर क्रम - इस क्रम के अनुसार शरीर के केन्द्रीय भागों में सबसे पहले विकास आता है। विकास केन्द्रवर्ती से दूरवर्ती भागों की ओर चलता है। जैसे धड़ और पेट के क्षेत्रों में शीघ्र क्रियाशीलता प्रकट होती है। हाथों और पैरों की उँगलियों में सबसे अन्त में क्रियाशीलता व्युत्पन्न होती है। इस क्रम के अनुसार शरीर के केन्द्रीय भाग पहले और क्रमशः दूरवर्ती भाग बाद में विकसित होते हैं।

3. विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है (Development proceeds from general to specific) - सामान्य से विशिष्ट की ओर उन्मुखता विकास का एक अन्य नियम है। मानसिक तथा गतिक (motor) अनुक्रियाओं में सामान्य क्रियाएँ पहले उत्पन्न होती हैं और विशिष्ट क्रियाएँ बाद में विकसित होती हैं। गर्भस्थ अवस्था में भ्रूण पहले सामान्य अनुक्रियाएँ करते हैं और विशिष्ट अनुक्रियाएँ करने में असक्षम होते हैं। समय की प्रगति के साथ धीरे-धीरे सामान्य से विशिष्ट अनुक्रियाएँ विकसित होती हैं। शिशुओं के प्रेक्षण से विदित होता है कि किसी उद्दीपन की उपस्थिति पर वे शरीर के किसी अंग विशेष के बजाय सम्पूर्ण शरीर को ही गति देते हैं। आयु वृद्धि के कारण ज्यों-ज्यों स्नायविक ओर पेशीय परिपक्वता बढ़ती हैं, शिशुओं की क्रियाएँ अधिक नियंत्रित होने लगती हैं और किसी उद्दीपन के प्रति शरीर के अंग विशेष में क्रिया उत्पन्न होने लगती है। आरम्भ में खिलौना देखकर शिशु सम्पूर्ण शरीर को घुमाने का प्रयास करते हैं किन्तु आवश्यक स्नायविक परिपक्वता को प्राप्ति के पश्चात् हाथ को खिलौने की ओर ले जाते हैं। यही नियम मानसिक क्रियाओं के विकास में भी लागू होता है- जैसे नवजात शिशुओं के प्रेक्षण द्वारा आरम्भ में उनकी मुखाकृति द्वारा किसी विशिष्ट संवेग की अभिव्यक्ति नहीं होती। वे केवल एक प्रकार की सामान्य उत्तेजना व्यक्त करते हैं। कुछ समय बीतने पर वे क्रोध, भय या प्रेम आदि विशिष्ट भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम हो जाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि सांवेगिक विकास भी सामान्य से विशिष्ट की ओर चलता है।

4. विकास एक निरन्तर प्रक्रिया है (Development is a continuous process) - विकास की क्रिया बिना रुके निरन्तर जारी रहती है। हाँ, इसकी गति सर्वदा समान नहीं होती। इसकी गति किसी अवस्था में तीव्र या मन्द हो सकती है। किन्तु विकास के अन्तर्गत निरन्तर होने वाले परिवर्तन गुणात्मक तथा मात्रात्मक होते हैं। यह परिवर्तन प्रगतिशील, क्रमिक और सुसम्बद्ध होते हैं। लोगों में मृत्यु के समय तक अविराम परिवर्तन होते रहते हैं, चाहे वे व्यक्ति के लिए अच्छे हों या बुरे। न्यूगार्टेन तथा अन्य (Neugarten et al 1969) ने बताया है कि विकास में होने वाले परिवर्तन बड़े होने पर लोगों को कैसे प्रभावित करते हैं।

5. विकास की गति परिवर्तित होती है (The rate of development

Scanned by CamScanner

varies) - इस विषय में हुए अध्ययनों से विदित होता है कि विकास की गति सर्वदा एक सी नहीं होती। विकास की गति में तीव्रता और मन्दता अथवा उतार-चढ़ाव के लक्षण देखे जाते हैं। बहुधा किसी नयी क्रिया का अर्जन करते-करते बच्चे किसी पिछली या पहले की क्रिया की पुनरावृत्ति करने का प्रयास करने लगते हैं, अतः विकास की गति में तीव्रता या मन्दता स्वाभाविक है। जब वे किसी पिछली क्रिया की पुनरावृत्ति करते हैं, तब तक नवीन क्रियाओं के लिए पेशीय एवं स्नायविक तत्परता वांछित मात्रा में विकसित हो जाती है। बहुधा चलना आरम्भ कर देने पर भी बच्चे कभी-कभी रेंगने की क्रिया करने लगते हैं। इस प्रकार विकास गति में तीव्रता और मन्दता देखी जाती है।

6. विकास के विभिन्न स्वरूप आपस में सम्बद्ध होते हैं (Different forms of development are interrelated)- एक परम्परागत धारणा यह है कि विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले विकास आपस में सुसम्बद्ध होते हैं। यह धारणा अनुभव द्वारा समर्थित भी होती है कि किसी एक क्षेत्र के विकास अन्य क्षेत्रों में होने वाले विकास से सम्बद्ध होते हैं। बहुधा देखा जाता है कि जिस बच्चे में शरीरिक क्रियाएँ शीघ्र विकसित होती हैं उसमें सामाजिकता, सांवेगिकता, भाषात्मक तथा मानसिक विकास भी शीघ्र आरम्भ होता है। वास्तव में शारीरिक और मानसिक विकास में धनिष्ट संबन्ध है। विशेष रूप से शारीरिक विकास, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास में गहरा संबन्ध है। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा होने पर सांवेगिक विकास अधिक सुचारु रूप से होता है। जिस बच्चे का स्वास्थ्य ठीक नहीं होता अर्थात् दुर्बल शरीर वाले बच्चों को अन्य बच्चे खेल में सम्मिलित नहीं करते, फलस्वरूप उनमें सामाजिक विकास विलंबित होने की प्रबल सम्भावना होती है। इसी प्रकार भाषा तथा नैतिक विकास भी सामाजिकता के विकास से सम्बद्ध है।

7. विकास परिपक्वता और अधिगम का परिणाम है (Development is the product of maturation and learning) - बाल विकास को अनुवंशिकता तथा परिवेश दोनों प्रभावित करते हैं, अतः शारीरिक एवं मानसिक विकास परिपक्वता और अधिगम, दोनों पर निर्भर करता है। दोनों में से किसी एक में न्यूनता बालक के शारीरिक और मानसिक विकास को कुण्ठित कर देता है।

आनुवंशिक रूप से प्राप्त गुणों का विकास, परिपक्वता कहलाता है। इसके कारण बालक के शरीरिक अंग, मांसपेशियाँ और तांत्रिकातंत्र समय के साथ अधिक कुशल, सुदृढ़ और सक्षम होते हैं, जिसे परिपक्वता द्वारा विकास की संज्ञा दी जाती है। एक निश्चित अवस्था में बालकों को रेंगना, घिसकना, बैठना, चलना आदि परिपक्वता पर निर्भर करता है। केवल शारीरिक और क्रियात्मक गुणों की उत्पत्ति ही परिपक्वता द्वारा नहीं होती वरन् इसके कारण मानसिक लक्षण भी उत्पन्न होते हैं। परिपक्वता द्वारा प्राणी में आने वाले परिवर्तन प्रजातीय (racial) गुण होने के नाते सार्वभौमिक होते हैं।

किन्तु सम्पूर्ण विकास मात्र परिपक्वता का परिणाम नहीं है। विभिन्न क्रियाओं को सम्पन्न करने में अभ्यास या अधिगम की भूमिका भी बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। अधिगम या

Scanned by CamScanner

प्रशिक्षण के अभाव में अनेक कुशलताएँ विकसित नहीं होतीं। वांछित परिपक्वता प्राप्त कर लेने पर अधिगम या अभ्यास का अवसर मिलना अति आवश्यक है। अवसर प्राप्त हो और बालक सीखने का प्रयास करे तो वह वांछित क्षमता को सीख सकता है। किन्तु अभ्यास के पूर्व पेशियों, तंत्रिकाओं आदि में परिपक्वता की प्राप्ति आवश्यक है। जब परिपक्वता आ जाती है तब विभिन्न क्रियाओं, व्यवहारों और क्षमताओं का विकास अधिगम पर निर्भर करता है।

समुचित विकास के लिए परिपक्वता और अधिगम की अन्तर्क्रिया आवश्यक है, क्योंकि मानव विकास इन दोनों का प्रकार्य है।

8. विकास में व्यक्तिगत भिन्नताएँ (Individual Differences in Development)- यद्यपि विकास के प्रतिमान सभी बच्चों के लिए समान होते हैं, किन्तु कुछ बालक सुचारु रूप से विकसित होते हैं- अर्थात धीरे-धीरे, विभिन्न चरणों में यथाक्रम विकसित होते है, अन्य में एकाएक विकास के लक्षण व्यक्त होते हैं। अभिप्राय यह है कि विकास प्रतिमानों के समान होते हुए भी विभिन्न बालकों के विकास में व्यक्तिगत भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक, सामाजिक, क्रियात्मक विकास आदि समान गति से नहीं चलते। किसी बालक में कोई विकास तीव्र गति से तो अन्य में मन्द गति से होता है। विकास में व्यक्तिगत भिन्नताएँ अनेक कारणों से अभिव्यक्त होती हैं, जैसे आनुवंशिक, कुपोषण, शिक्षण, स्वास्थ्य, अन्तःस्रावी ग्रंथियों के हारमोन्स, अवसर तथा मनोवैज्ञानिक कारण आदि।

9. आरम्भिक विकास उत्तर विकास से अधिक महत्त्वपूर्ण होता है (Early Development is more critical than later development) - चीनी भाषा की एक कहावत है, कि, "जिधर डाल झुका दी जाती है, पेड़ उधर ही झुक जाता है" (As the twi is bent, so the tree is inclined) मिल्टन ने कवियों की शब्दावली में इसी तथ्य को व्यक्त करते हुए कहा था कि "बाल्यकाल मनुष्य को वैसे ही दर्शाता है, जेसे सुबह दिन को दर्शाता है।" (Milton expressed the same fact when he wrote, "The childhood shows the man, as morning shows the day.")

व्यक्तित्व कुसमायोजन के अध्ययनों में फ्रायड ने सर्वप्रथम यह सार्थक संकेत दिया कि आरम्भिक वर्ष जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण है। उसने कहा था कि बाल्यावस्था की अप्रिय अनुभूतियाँ प्रौढ़ावस्था की विकृतियों का मूल कारण हैं। एरिक्सन (Erickson) के अनुसार बाल्यावस्था में ही व्यक्ति के गुणों-दोषों का विकास होता है। जीवन के आरम्भिक वर्षों में अर्जित व्यवहार प्रतिमान प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था तक बने रहते हैं। यह तथ्य अनेक अध्ययनों से प्रमाणित है। अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा खाली समय व्यतीत करने से सम्बद्ध वरीयताओं के विषय में बाल्यावस्था के स्थापित व्यवहार और क्रियाओं में जीवन की प्रगति के साथ बहुत कम परिवर्तन आते हैं। यह बात व्यक्तित्व के विषय में भी सत्य है। अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि व्यक्तित्व के आरम्भिक प्रतिमान आगामी अवस्थाओं में अपेक्षाकृत स्थिर रहते हैं। बालक के स्कूल जीवन के प्रथम पाँच वर्ष उस काल की अनुभूतियों के कारण अत्यन्त

Scanned by CamScanner

महत्त्वपूर्ण होते हैं। विकास की आरम्भिक आधारशिला को अनेक दशाएँ प्रभावित करती हैं। इनमें अनुकुल अन्तर्वैयक्तिक संबन्ध, सांवेगिक दशाएँ, बाल प्रशिक्षण विधियाँ, आरम्भिक भूमिका-निर्वाह, बाल्यावस्था में पारिवारिक संरचना तथा परिवेशीय उद्दीपक आदि प्रमुख हैं।

Scanned by CamScanner